International Journal of Sociology and Political Science
www.sociologyjournal.in
Online ISSN: 2664-7745, Print ISSN: 2664-7737
Received: 14-07-2022, Accepted: 01-08-2022, Published: 17-08-2022
Volume 4, Issue 2, 2022, Page No. 21-25

भारतीय एवं यूरोपियन राष्ट्रवादः एक तुलनात्मक अध्ययन

मनोज कुमार, अनुराग पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर, दयाल सिंह महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
प्रस्तुत लेख राष्ट्रवाद की विश्लेषणात्मक व्याख्या करता है। सामान्य अर्थों में राष्ट्र और राष्ट्रवाद यूरोप से जोड़कर देखा जाता है और अधिकतर लेख एवं पुस्तकें या तो यूरोपियन राष्ट्रवाद की व्याख्या करतीं हैं या यूरोपियन राष्ट्रवाद को किसी देश के परिप्रेक्ष्य में रखकर देखतीं है। विचारक यूरोप के राष्ट्रवाद को सार्वभौमिक मानकर अध्ययन एकांगी अध्ययन करते हैं, यहीं से ये जानना आवश्यक हो जाता है के क्या राष्ट्रवाद की यूरोपियन अवधारणा समस्त देशों पर एक समान रूप से लागू की जा सकती है? इसी प्रश्न का उत्तर जानने के लिए प्रस्तुत लेख भारतीय राष्ट्रवाद का अध्ययन करता है और इसकी तुलना यूरोपियन राष्ट्रवाद से करता है। अंत लेख ये जानने का प्रयास करता है के क्या यूरोप के राष्ट्रवाद की अवधारणा सार्वभौमिक है या नहीं, क्या यूरोप के राष्ट्रवाद को राष्ट्रवाद कहना उचित है? और भारतीय राष्ट्रवाद यूरोप के राष्टवाद से कितना अलग और अतुलनीय है।

मूल शब्दः राष्ट्रवाद, जिन्गोइज़्म, बेनेडिक्ट एंडरसन, प्रिंट मीडिया और राष्ट्रवाद, औपनिवेशिक शासन और भारतीय राष्टवाद, समाहित करने की अवधारणा

प्रस्तावना
राष्ट्रवाद का अर्थ सामान्यतः राष्ट्र के व्यक्तियों द्वारा राष्ट्र के साथ अपनी खुद की पहचान को जोड़ना होता हैं, राष्ट्र के प्रति लगाव एवं अपने राष्ट्र के हितों को एक राष्ट्रवादी हमेशा सर्वोपरी रखता/रखती हैं। राष्ट्रवाद अधिकतर मामलों में किसी दूसरे राज्य, उस राज्य के निवासियों का बहिष्कार या उनके तीक्ष्ण विरोध पर आधारित होता है। ये कहा जा सकता है के कई मामलों में राष्ट्रवाद किसी अन्य राज्य, उस राज्य के नागरिकों, नागरिक समाज एवं सामाजिक–राजनीतिक व्यवस्था से नफ़रत, घृणा और उन्हें कमतर आंकने या उस राज्य को छोटा साबित करने के सिद्धांतों इत्यादि पर आधारित होता है। राष्ट्रवाद का ये स्वरुप विकृत होता है।
राष्ट्रवाद पर कुछ ऐसी ही समझ बेनेडिक्ट एंडरसन की भी है। अपनी पुस्तक Imagined Communities: Reflections on the Origin and Spread of Nationalism में एंडरसन ये तर्क देते हैं के एक राष्ट्र सिर्फ एक सामाजिक रूप से निर्मित समुदाय है, जिसकी कल्पना वे लोग करते हैं जो खुद को उस समूह का हिस्सा मानते हैं।[1]
एंडरसन इस बात पर ध्यान केंद्रित करतें है के राष्ट्रवाद की अवधारणा अत्यंत आधुनिक है और इसको निर्मित करने में मीडिया अहम भूमिका निभाता है। एंडरसन तर्क देते हैं के मीडिया एक कल्पित समुदायों का निर्माण करता है। इस प्रक्रिया में विशेष रूप से किसी व्यक्ति के सामाजिक मानस को आकार देने में प्रिंट मीडिया की शक्ति अहम होती है। एंडरसन इस प्रिंट मीडिया का विश्लेषण करतें है, और कहते हैं के लेखकों और मीडिया कंपनियों (विशेष रूप से किताबें, समाचार पत्र और पत्रिकाओं) द्वारा उपयोग किए जाने वाले उपकरण के साथ–साथ मानचित्र, जनगणना और संग्रहालय के सरकारी उपकरण, ये सभी उपकरण प्रमुख छवियों, विचारधाराओं और भाषा के माध्यम से सार्वजनिक क्षेत्र में बड़े पैमाने पर दर्शकों को लक्षित करने और परिभाषित करने के लिए बनाए गए थे। एंडरसन एक सामान्य सिद्धांत की व्याख्या करने से पहले इन प्रथाओं के नस्लवादी और औपनिवेशिक मूल की खोज करतें हैं और बताते हैं के समकालीन सरकारें और निगम इन समान प्रथाओं का कैसे उपयोग करतें हैं (या समान्यतः करते हैं)।[2]
एंडरसन के अनुसार, ''प्रिंट पूंजीवाद'' के कारण कल्पित समुदायों का निर्माण संभव हुआ। परिसंचरण को अधिकतम करने के लिए पूंजीवादी उद्यमियों ने अपनी पुस्तकों और मीडिया को स्थानीय भाषा (विशेष लिपि भाषाओं, जैसे लैटिन भाषा) में मुद्रित किया। नतीजतन, विभिन्न स्थानीय बोलियों को बोलने वाले पाठक एक–दूसरे को समझने में सक्षम हो गए, और एक सामान्य वाद सामने आया। एंडरसन ने तर्क दिया के इस प्रकार पहले यूरोपीय राष्ट्र राज्यों का गठन उनकी ष्राष्ट्रीय प्रिंट–भाषाओंष के साथ साथ हुआ था। एंडरसन का तर्क है कि पूंजीवाद का पहला रूप किताबों और धार्मिक सामग्रियों को छापने की प्रक्रिया से शुरू हुआ था।[3]
एंडरसन के काल्पनिक समुदायों के सिद्धांत के अनुसार, राष्ट्रवाद का मुख्य कारण दैवीय अधिकार और वंशानुगत राजतंत्र द्वारा शासन के विचारों को समाप्त करने का आंदोलन है। इसलिए, प्रिंटिंग प्रेस और पूंजीवाद के उदय के साथ, लोगों सभी को एक साथ लाने वाले सामान्य मूल्यों के बारे में राष्ट्रीय चेतना विकसित करि। इसके पश्चात काल्पनिक समुदायों ने स्वयं के राष्ट्रीय प्रिंट–भाषाओं के निर्माण का कार्य शुरू किया, और ये भाषा आम जनमानस में अपनी पैठ बनाती गई। इससे राष्ट्र–राज्यों के पहले रूपों को विकसित करने में मदद मिली, जिन्होंने तब कला, उपन्यास, प्रकाशन, मास मीडिया और संचार का अपना मुख्य स्त्रोत बनाया।[4]
अतः एंडरसन राष्ट्र को ''एक कल्पित राजनीतिक समुदाय'' के रूप में परिभाषित करते हैं और कहते हैं के एक राष्ट्र की ष्कल्पना की जाती है, कल्पना इसलिए क्योंकि सबसे छोटे राष्ट्र के सदस्य भी अपने अधिकांश राष्ट्र–राज्य के निवासियों

को नहीं जानते हैं, ना ही उनसे कभी मिल पाएंगे या सुन पाएंगे, फिर भी प्रत्येक व्यक्ति के मन में एक काल्पनिक समुदाय की छवि बनी रहती है। अंत में एंडरसन के अनुसार प्रत्येक समाज में व्याप्त वास्तविक असमानता और शोषण के बावजूद, राष्ट्र को हमेशा एक गहरी, क्षैतिज कॉमरेडशिप के रूप में माना और दर्शाया जाता है। कुल मिलाकर ये एक बिरादरी है जो पिछली दो शताब्दियों में, इतने लाखों लोगों को राष्ट्र के नाम पर कल्पित रूप से जोड़ती है, इस प्रक्रिया में किसी अन्य को मारना इतना महत्वपूर्ण नहीं है जितना सीमित कल्पनाओं के लिए स्वेच्छा से मरने के लिए।

वहीं सच्चे अर्थों में राष्ट्रवाद अपने देश से प्रेम, नागरिकों के प्रति आपसी सम्मान, अपने देश की सामाजिक–राजनीतिक व्यवस्था से लगाव, अन्य राज्यों एवं उसके नागरिकों के प्रति सम्मान इत्यादि भावनाओं पर आधारित होता है।[5]

एंडरसन द्वारा प्रस्तुत सिद्धांत यूरोपियन या पश्चिमी राज्यों पर तो लागू किया जा सकता है किन्तु भारत जैसे राज्यों पर नहीं। भारतीय राज्य अथवा समाज ने पूंजीवाद का फैलाव उस तरह से नहीं देखा जैसे ये यूरोप में विकसित हुआ, ना ही भारत में कभी कोई औद्योगिक क्रांति ही हुई, साथ में औपनिवेशिक दौर में जो प्रिंट मीडिया विकसित हुआ वो यूरोपियन उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद के विरुद्ध ही प्रयोग किया गया, कुल मिलाकर भारत में प्रिंट मीडिया का प्रयोग आजादी के लिए एक जनचेतना विकसित करने और पूंजीवाद का विरोध करने और स्वदेशी को आगे बढ़ाने के लिए किया गया। तो भारत में उस काल्पनिक समुदायों का निर्माण कभी हुआ ही नहीं जिसकी बात एंडरसन कर रहे हैं। भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए एक जनचेतना जरूर उभरी जिसने बहुसंख्यक जनता को स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए प्रेरित किया।[6]

उपरोक्त लिखित दोनों व्याख्याओं को एक संक्षिप्त उदहारण से समझा जा सकता है, हम अपने जीवन में अपने परिवार एवं पारिवारिक सदस्यों से कभी अलग नहीं होते, एक परिवार में प्यार, सम्मान, आत्मीयता की भावना होती है, हम सभी को अपने परिवार पर गर्व होता है, कुछ गलत हो तो गुस्सा आता है, कभी सफलता ना मिले या कोई ऐसा काम हो जाए (जैसे पड़ोसी से झगड़ा, बच्चे का किसी इम्तिहान में कम नम्बर आना या सफल ना होना इत्यादि), तो हमें ऐसी किसी भी या इससे इतर किसी भी परिस्थिति में शर्म भी आती है। अतः गर्व और शर्म के मिश्रण से ही एक आदर्श परिवार बनता है, जहाँ गर्व आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है वहीं शर्म गलतियों से सीखने की शिक्षा।

एक दूसरे के साथ कितना भी वैचारिक मतभेद हो, किसी बाहरी के हस्तक्षेप करने से सभी परिवार के सदस्य एक हो जातें हैं, आपसी मतभेद होना हर परिवार की एक खूबसूरती होती है, लेकिन इन मतभेदों के साथ प्यार और लगाव एक परिवार को अटूट बनाता है।

किसी व्यक्ति, समुदाय या राष्ट्र–राज्य से नफ़रत के आधार पर जिस राष्ट्रवाद का उदय होता है उसे राष्ट्रवाद नहीं कहा जा सकता, इस तरह के विचार को संकीर्ण राष्ट्रवाद कहा जाता है। इस तरह का राष्ट्रवाद 'जिन्गोइस्ट विचार' (उग्र राष्ट्रवाद जो दूसरे देशों के साथ युद्धोन्मादी होता है और कई बार अपने खुद के देश की एक बड़ी जनसँख्या के विरुद्ध होता है) पर आधारित होता है। जिन्गोइस्ट अपने देश को सर्वोच्च, अपनी संस्कृति को महान, भाषा को अन्य भाषाओँ से सर्वश्रेष्ठ इत्यादि मानता है, लेकिन अन्य देश/देशों को, संस्कृतियों को, भाषाओं को निम्न और पिछड़ा हुआ मानता है, यहाँ तक की राष्ट्रवाद की ये जिन्गोइस्ट अवधारणा अपने खुद के देश की एक बड़ी जनसंख्या के विरुद्ध होता है क्योंकि वो जनसँख्या इन जिन्गोइस्ट से धर्म, भाषा, संस्कृति, खान–पान के मामलों में अलग होती है। जिन्गोइस्ट विश्व के लगभग हर देश में मौजूद हैं।

यहाँ ये बताना आवश्यक है के जिसे एंडरसन राष्ट्रवाद कह रहे हैं वो वास्तविक रूप में जिंगोइस्म है, राष्ट्रवाद नहीं। हिटलर के दौर में जो 'जर्मन राष्ट्रवाद' फैला था, जो नफरत के सिद्धांत पर आधारित था, जो देश की एक बड़ी जनसंख्या (यहूदी, श्रमी) के खिलाफ था, जो अन्य देशों से 'जर्मन रेस' को श्रेष्ठ मानता था। अगर एंडरसन की मानें तो जर्मनी में जो वाद फैला वही राष्ट्रवाद है जो किसी अन्य के खिलाफ ही होता है, लेकिन इस तरह के किसी भी वाद को राष्ट्रवाद नहीं कहा जा सकता ये जिंगोइस्म है, अंततः ये लेख भारतीय परिप्रेक्ष्य में इस बात की समीक्षा करता है के एंडरसन का राष्ट्रवाद का सिद्धांत वास्तविक रूप में जिंगोइस्म का सिद्धांत है, जिसे भारत पर लागू नहीं किया जा सकता।

आजादी से पूर्व भारत में राष्ट्रवाद

जब यूरोपियन उपनिवेशवाद (मुख्यतः ब्रिटिश) भारत आता है तब वो भारतियों से कुछ सवाल पूछते हैं, "आप भारतीय कैसे एक राष्ट्र बन सकते हैं? ना आपके पास एक भाषा है, ना एक धर्म है, ना एक संस्कृति है, ना एक तरह का खान–पान है इत्यादि तो भारत को एक राष्ट्र कैसे माना जाए? हमे (ब्रिटिश) देखिये, हमारे पास एक धर्म है, एक भाषा है, एक संस्कृति है, इसलिए हम एक राष्ट्र हैं, और क्युकी आपके पास एक जैसा कुछ नहीं है, आप राष्ट्र नहीं हो सकते। अब क्युकी आप एक राष्ट्र नहीं है तो राष्ट्रवाद कैसे आएगा और आप आजादी की मांग कैसे कर सकते हैं। ब्रिटिश भारत की विविधता, कई भाषाओ, क्षेत्रीयता, धर्म इत्यादि पर सवाल खड़ा कर रहे थे और ये जताने का प्रयास कर रहे थे के बिना राष्ट्र के राष्ट्रवाद नहीं आएगा, और बिना राष्ट्रवाद के एकजुटता नहीं होगी, समुदाय की भावना विकसित नहीं होगी तो इस स्थिति में भारत स्वतंत्रता के लिए एकजुट और संगठित कैसे होगा?[7] (इस सवाल ने 1857 की क्रांति के बाद जोर पकड़ा)।

भारतियों द्वारा इस सवाल के दो तरह से जवाब दिए गये, पहला वर्ग (नरमपंथी राष्ट्रवादी और कुछ सांस्कृतिक विचारक थे) ने जवाब दिया के हाँ हम एक राष्ट्र हैं, हमारे पास एक प्रमुख भाषा है (हिंदी), एक प्रमुख धर्म है (हिन्दू) और एक प्रमुख संस्कृति है (हिन्दू), हमारे पास भी बाइबिल की तरह वेद हैं, हम भारतीय भी बिलकुल आपकी (ब्रिटिश) की तरह एक है, इसलिए हम भी एक राष्ट्र हैं। ये सबसे पहला रेस्पोंसे था जिसमे भारत ने यूरोपियन शैली की तरह देश में एकरूपता दिखाने का प्रयास किया, ताकि ये सिद्ध किया जा सके के भारत भी एक राष्ट्र है। ब्रिटिश राष्ट्रवाद के सामने जो ये राष्ट्रवाद खड़ा करने का प्रयास किया गया इसने भारत को ब्रिटिश राष्ट्र की तरह दिखाने का प्रयास किया, ताकि एक राष्ट्रवादी संकल्पना को खड़ा किया जा सके। इस तरह के राष्ट्र का सृजन ब्रिटिशर्स द्वारा खड़े किये गये सवाल पर सिर्फ एक प्रतिक्रिया मात्र थी, ये घबराहट में की गई प्रतिक्रिया थी, ये एक डर से उपजी प्रितिक्रिया थी, जिसमे भारतीय विचारकों ने ब्रिटिश राष्ट्र की तर्ज पर ये सिद्ध करने का प्रयास किया के भारत में भी ब्रिटेन के सामान एकता है, एक प्रमुख धर्म, संस्कृति और भाषा है, भारत ने ब्रिटिश की तरह एकरूपता प्रदर्शित करने का प्रयास किया। ये शुरूआती प्रयास

था, जिसमे ये भावना प्रबल थी के हम भारतीय भी ब्रिटिश के समान एक राष्ट्र हैं[8] और आजादी की मांग एक राष्ट्र होने के कारण रख सकते हैं और उपनिवेशवाद के खिलाफ आवाज उठा सकते हैं।

हालांकि नरमपंथी जो यूरोपियन शैली से बहुत प्रभावित थे और ब्रिटिश शासन को भारत के लिए अच्छा मानते थे, राष्ट्रवाद की इस विचारधारा से अलग थे। नरमपंथियों ने कभी राष्ट्रवाद का समर्थन नहीं किया और ना ही उन्होंने कभी भारत की विविधता को चुनौती दी।[9] कुछ समय बाद एक दूसरा वर्ग आया (गरमपंथी राष्ट्रवादी, गांधी, नेहरु, वीर सावरकर, टेगोर, भगत सिंह इत्यादि), इस दूसरे वर्ग ने ब्रिटिशर्स से ही सवाल कर दिया, जैसे कहाँ लिखा है के एक राष्ट्र बनने के लिए भारत को आपके राज्य जैसा होना पड़ेगा? जो परिभाषा आपने दी है उस परिभाषा को हम भारतीय सार्वभौमिक सत्य क्यों मानें? हम एक राष्ट्र हैं, और आपके राष्ट्र से बिलकुल अलग हैं, हमे राष्ट्र बनने के लिए आप जैसा बनने की जरूरत नहीं है, हम आपसे बिल्कुल अलग एक अनोखे और अद्वितीय राष्ट्र हैं। हम एक जैसे नहीं हैं, ना ही हम एक जैसा बनना चाहते हैं, आपके देश जैसा हमारे यहाँ एक धर्म की प्रधानता नहीं है, हम एक धर्म की प्रधानता को स्वीकार भी नहीं करना चाहते, हमारे यहाँ कई भाषाएँ हैं, हम आपके जैसे एक भाषा वाले राष्ट्र बनना भी नहीं चाहते और हम एक जैसी संस्कृति वाले राष्ट्र नहीं हैं, हमे एक जैसी संस्कृति वाला राष्ट्र बनना भी नहीं है। हमारा राष्ट्र विविधता के सिद्धांत पर आधारित है और ये विभिन्न संस्कृतियों का सम्मान करता है।[10]

ब्रिटिश शासन और राष्ट्रवाद

औपनिवेशिक काल में शुरुआत के राष्ट्रवादी (नरमपंथी) अंग्रेजो के शासन को वरदान मानते थे, किसी मुद्दे पर अंग्रेजों से प्रार्थना किया करते थे एवं उनका विरोध नहीं करते थे, नरमपंथी ब्रिटिश शासन को भारतियों के लिए सर्वोत्तम मानते थे क्यूंकि उनका ये विश्वास था के ब्रिटिश भारत को अपने जैसा एक सभ्य देश बनाने आये हैं। वो ब्रिटिश शासन को वरदान मानते थे, ये हमें पता है, लेकिन क्यों मानते थे ये कम लोग जानते हैं। इसका जवाब Orientalism में है, Orientalism को हिंदी में प्राच्यवाद कहतें हैं। प्राच्यवाद विश्व को दो गुटों में बांटता है, एक ओरिएंट और दूसरा ओक्सिडेंट। Orientalist या प्राच्यवादी विचारकों ने पूर्वी राज्यों को ओरिएंट कहा, जो पिछड़े हैं, जिनमे तार्किकता का अभाव है, आधुनिकता से कोसो दूर हैं, परम्परावादी हैं, धर्मांध हैं इत्यादि, वहीं दूसरी और इन्हीं विचारकों ने पश्चिमी और यूरोपियन राज्यों को ओक्सिडेंट कहा, जो विकसित हैं, तार्किक हैं, आधुनिक हैं, विवेकशील हैं, धर्मांध नहीं हैं इत्यादि। इन नरमपंथियों पर इसी Orientalist या प्राच्यवादी विचारों का गहरा असर था और इसीलिए ये सभी ब्रिटिश शासन को भारत पर एक वरदान माना करते थे।[11]

प्राच्यवाद और भारत

जब ब्रिटिश भारत आये तो उनके सामने सबसे बड़ी समस्या थी के इस विभिन्नताओं वाले देश पर शासन कैसे किया जाए? युद्ध या तलवार के दम पर ब्रिटिश बहुत समय तक राज नहीं कर कर सकते थे और ना व्यापार (लूट)। तब कुछ प्राच्यवादी विचारक भारत आये जिन्होंने संस्कृत, उर्दू, फारसी, पाली इत्यादि भाषाओँ का गहन अध्ययन किया और वेद, पुराण, स्मृतियाँ, कुरान इत्यादि धर्म ग्रंथों का गहन अध्ययन किया। प्राच्यवादी विचारकों में विलियम जोन्स, जे एस मिल इत्यादि प्रमुख विचारक थे, जिन्होंने भारत का अध्ययन किया और भारतियों को अपने लेखों के जरिये ये अहसास कराया के वो वाकई में पिछड़े हैं, इनमे जे एस मिल का भारतीय इतिहास का तीन भागों में विभाजन आज भी प्रयोग किया जाता है, मिल ने प्राचीन भारत को हिन्दू भारत कहा और उसे भारत का स्वर्ण युग बोला, मध्यकालीन भारत को मुस्लिम भारत और आधुनिक भारत को ब्रिटिश भारत या संक्रमण कालीन भारत कहा, मजेदार बात ये के आधुनिक भारत को क्रिस्चियन भारत नहीं कहा गया।[12]

उस दौर के राष्ट्रवाद की खूबसूरती इसी बात में थी के जो भी ब्रिटिश विरोधी आन्दोलन चलाया गया या आजादी के लिए जो संघर्ष किया गया वो सिद्धांतों पर आधारित था, अफ्रीकन राष्ट्रवाद की तरह भारत ने कभी ये नही कहा के ब्रिटिश की और हमारी स्किन का रंग अलग है, इसलिए ब्रिटिश के खिलाफ खड़ा होना चाहिए, उनको देश से भगाना चाहिए, बल्कि भारतीय राष्ट्रवादियों ने ब्रिटिश शासन को सम्राज्यवादी और उपनिवेशवादी मानते हुए इसका इसका विरोध किया। उन्होंने ब्रिटिश शासन का इस आधार पर विरोध किया के एक इन्सान किसी दूसरे इन्सान को अपना गुलाम नहीं बना सकता, इस आधार पर आजादी की लड़ाई लड़ी के एक देश किसी दूसरे देश को अपना गुलाम नहीं बना सकता। भारत की आजादी की लड़ाई स्वतंत्रता, समानता, न्याय, विश्व–बंधुत्व के सिद्धांतों पर आधारित थी, किसी संकीर्ण विचार पर नहीं। यहीं से भारतीय राष्ट्रवाद की नींव पड़ी, जो ब्रिटिश से नफरत पर आधारित नहीं था बल्कि इनका विरोध ब्रिटिश उपनिवेशवाद और प्राच्यवादी विचारों से था।

आज का भारतीय राष्ट्रवाद

अब ऊपर लिखी हुई बातों पर वापस आते हैं, जिनसे कुछ सवाल खड़े होते हैं, क्या हम भारतवासी एक दूसरे से प्यार करते हैं? क्या किसी गरीब, दिन हीन व्यक्ति को देखकर हमारे मन में ये विचार आता है के मेरे देश के नागरिक को दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं, क्या जब हम किसी किसान के बारे में कुछ अप्रिय सुनते हैं तो हमारा मन व्यथित होता है? क्या भारत की विविधताओं का सम्मान करते हुए एक माला में सभी पहचानों को पिरोया जा सकता है? इसका जवाब कोई हाँ में या कोई ना में देगा/देगी, वास्तविक रूप से जितने भी व्यक्ति इसका जवाब हाँ में देंगे वो सच्चे राष्ट्रवादी हैं,क्योंकि उनके अंदर सेवा भाव है, ये सेवाभावना ही राष्ट्र निर्माण का कार्य करती है और इसी सेवा भाव से राष्ट्रवाद का जन्म होता है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपने को दूसरे से जुड़ा हुआ पाता है, इसकी अगर एक भी कड़ी कमजोर हुई तब ना राष्ट्र निर्माण होगा ना ही राष्ट्रवाद अस्तित्व में आएगा। राष्ट्रिय स्वयं सेवक संघ इसी सेवाभावना के सहारे राष्ट्र निर्माण का कार्य स्वतंत्रता प्राप्ति से पहले से कर रहा है, यही सेवाभावना एकजुटता लेकर आती है और सभी भारतियों को एकसूत्र में जोड़ने का प्रयास करती है, ताकि एक मजबूत नागरिक, एक सशक्त राष्ट्र और राष्ट्रवाद का विकास हो सके।[13]

फिर भारत का राष्ट्रवाद आखिर है क्या? भारत के राष्ट्रवाद को समझने के लिए शुरुआत राष्ट्रगान से करते हैं, हमारे देश का राष्ट्रगान किसी भी अन्य देश के राष्ट्रगान से ज्यादा वृहत्तर है, समावेशी है। हमारा राष्ट्रगान देश के हर राज्य को अपने में सम्मिलित करता है, ये भारत देश को एक यूनिट नहीं मानता बल्कि ये राष्ट्रगान वास्तविक रूप में देश की विविधता का सम्मान करता है। बाकी देशो के राष्ट्रगान सिर्फ देश की बात करते हैं, देश के विभिन्न राज्यों की नहीं, ये राष्ट्रगान उम्मीद करते हैं के सभी राज्य के निवासी एक राष्ट्र में आकर मिल जाएँ, ये देश अपने विभिन्न राज्यों का नाम लेने से घबराते हैं के कहीं से अलगाव की भावना ना उठने लगे, इसलिए देश या राष्ट्र के लिए समर्पण भाव इनके राष्ट्रगान में प्रदर्शित होता है, लेकिन भारतीय राष्ट्रगान सभी राज्यों को उनकी विविधता के साथ भारतीय राज्य में समाहित करता है, सभी राज्यों उनकी संस्कृति, भाषा इत्यादि को पूरा सम्मान देता है और इसी वजह से हमारा राष्ट्रगान ज्यादा समावेशी है।

दूसरे, भारतीय राष्ट्रवाद एकता के सिद्धांत पर आधारित है, लेकिन भारतीय राष्ट्रवाद इस एकता को धर्म, जाति, सम्प्रदाय, भाषा, क्षेत्रीय पहचान इत्यादि के आधार पर स्वीकार नहीं करता, बल्कि भारतीय राष्ट्रवाद मूल्यों के आधार पर इस एकता को स्वीकार करता है, ये विविधता का सम्मान करता है और सभी तरह की संस्कृतियों को, धर्म को, भाषाओँ को, क्षेत्रीय पहचान को अपने में समाहित करता है। भारतीय राष्ट्रवाद किसी एक ख़ास संस्कृति को, किसी एक ख़ास भाषा को, किसी एक ख़ास धर्म को या किसी क्षेत्र विशेष को बाकी सब पर थोपता नहीं हैं। ये सम्मान की भावना पर आधारित है।

तीसरा, भारतीय राष्ट्रवाद शुरू से कुछ सिद्धांतों पर आधारित रहा है, जो एकता एवं समरूपता के सिद्धांत पर आधारित था, भारतीय औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश के खिलाफ इसलिए संघर्ष नहीं कर रहे थे क्युकी उनका रंग हमारे रंग से अलग है, बल्कि आजादी की लड़ाई इस आधार पे लड़ी जा रही थी क्युकी ब्रिटिश शासन अत्याचारी था, क्युकी औपनिवेशवाद अन्यायी था, और किसी देश को गुलाम बनाना समानता, स्वतंत्रता, न्याय के सिद्धांतों के खिलाफ था। आज का भारतीय राष्ट्रवाद भी सिद्धांतों पर ही आधारित है, ये हमें देश और देशवासियों से प्यार करना सिखाता है, भले ही देशवासी किसी भी जाति, धर्म, सम्प्रदाय, क्षेत्र, या संस्कृति का हो। भारतीय राष्ट्रवाद में किसी के प्रति नफरत के लिए कोई जगह नहीं है। लेकिन अगर कोई व्यक्ति, समूह या संगठन किसी अन्य से नफरत के भाव रखता है तो यहाँ भी वो सभी भारतीय राष्ट्रवाद के मूलभूत सिद्धांतों के विरुद्ध जा रहे हैं। और इन सभी समुदायों में भारतीय राष्ट्रवाद की भावना जागृत करना अनिवार्य है एवं इन्हें राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ने का प्रयास आरएसएस लगातार करती आ रही है।

चौथा, भारतीय राष्ट्रवाद के उपरोक्त गुणों की वजह से ही हम भारतीय सभी देशों का, उनकी संस्कृति का सम्मान करते हैं। यही राष्ट्रवाद हमें विभिन्न देशों से जोड़ता है, उनसे अलग नही करता। आजादी के संघर्ष के समय भी इसी राष्ट्रवाद ने हमे दूसरे विदेशी देशों से जोड़ा, चाहे वो अफ्रीका हो या लैटिन अमेरिका हो या जापान हो, रूस हो वगेरह।

पांचवा, भारत का राष्ट्रवाद आतंरिक रूप से एकजुटता पर बल देता है, भारतीय राष्ट्रवाद किसी व्यक्ति को उसकी जाति, धर्म, भाषा इत्यादि के आधार पर अलग नहीं करता, बल्कि सभी का सम्मान करता है और समाहित करता है।

भारतीय राष्ट्रवाद सभी भारतियों को उनके धर्म, भाषाई, क्षेत्रीय, सांस्कृतिक इत्यादि पहचानों के आधार पर उन्हें बांटता नहीं है, बल्कि जोड़ता है। यूरोप में आज अगर कोई कहे के वो राष्ट्रवादी है, तो सुनने वाले उस व्यक्ति को शक की नज़र से देखेंगे, ये सोचते हुए के ये शक्स किसी समुदाय, संस्कृति, भाषा या रंग के खिलाफ है और कभी भी आक्रामक हो सकता है और शायद किसी अप्रिय घटना को रोकने के लिए पुलिस भी बुला लें। आज कोई भी यूरोपियन अपने को राष्ट्रवादी नहीं कहता/कहती क्यूंकि यूरोप के राष्ट्रवाद ने एक दूसरे से नफरत का पाठ ही पढ़ाया, इसीलिए सभी यूरोपियन देश राष्ट्रवाद के सिद्धांत को पीछे छोडकर एक साथ मिल गये और यूरोपियन यूनियन बनाई ताकि सभी यूरोपियन राज्य एकजुट होकर रह सके।

वहीं दूसरी ओर यूरोप से बिलकुल अलग भारतीय राष्ट्रवाद विविधता में एकता की बात करता है, ये किसी धर्म, जाति, सम्प्रदाय या संस्कृति के विरुद्ध नहीं है। भारतीय राष्ट्रवाद नकारात्मक नहीं है।

अंत में,भारत एक ऐसा देश है जिसने दुनिया को ये दिखाया के एक गरीब देश में सच्चा राष्ट्रवाद आ सकता है, जो किसी से नफरत नहीं करता बल्कि सबका सम्मान करता है, जो ये दिखा सकता है के एक गरीब देश भी सबसे बड़ा प्रजातंत्र बन सकता है, एक समय प्रजातंत्र के बारे में ये माना जाता था के ये सिर्फ विकसित देशो में ही फल फूल सकता है, भारत ने आजादी के बाद से अब तक प्रजातंत्र को सफलतापूर्वक चलाया और उसको मजबूती दी। ये देश के इसी राष्ट्रवाद का परिणाम है जिसकी यहाँ चर्चा की गई, जो विविधताओं का सम्मान करता है। उस दौर में कई विचारक ये मानते थे के गहरी विविधताओं वाला देश कभी मजबूत नहीं हो सकता और विभिन्न टुकड़ों में बंट जाता है, भारत को आजादी मिलने के बाद भी कुछ विचारकों ने ये माना था के भारत बहुत समय तक एक आजाद एवं संगठित राज्य के रूप में नही रह पायेगा और कई टुकड़ों में बंट जायेगा, क्युकी ये विविधताओं से भरा हुआ है, लेकिन ऐसा हुआ नहीं। आज भारत विश्व का सबसे बड़ा प्रजातांत्रिक देश है। ये भी इसी राष्ट्रवाद का परिणाम है, जो सभी को समाहित करता है, खुद भारतीय प्रजातंत्र की अवधारणा सभी मतों, धर्मों, संस्कृतियों इत्यादि को अपने में समाहित करते हैं। ये भारत की खूबसूरती है, भारत कई भागों में टूटने से इसलिए नहीं बचा क्युकी भारतीय राष्ट्रवाद ने देश पर भारतीयता की पहचान थोपी या किसी धर्म विशेष की पहचान सभी पर थोपी या किसी एक क्षेत्र विशेष की संस्कृति, भाषा सभी भारतियों पर थोपी, भारत बचा रहा क्युकी भारतीय राष्ट्रवाद ने सभी संस्कृतियों, धर्मों, भाषाओँ, क्षेत्र, इत्यादि को पूरा सम्मान दिया, अपने में सबको समाहित किया। एक व्यक्ति भारत में तमिल या बंगाली या गुजरती या मराठी होने के साथ साथ भारतीय भी है, इन सभी की विभिन्नताओं का सम्मान भारतीय राष्ट्रवाद ने किया। मुझे गर्व है भारतीय होने पर, लेकिन साथ ही साथ जब देश में कुछ गलत होता है तो मुझे शर्म भी आती है। भारत ने विश्व को विभिन्नताओं (धर्म, संस्कृति, भाषा इत्यादि) का सम्मान करना सिखाया है, विभिन्नताओं को राष्ट्र में समाहित करना सिखाया है, विभिन्नताओं को किस तरह देश की धारा में जोड़ते हैं, ये सिखाया है। ये बात अक्षरशः सही है के आने वाले समय में भारत विश्व गुरु बनेगा, भारतीय राष्ट्रवाद विश्व को ये सिखाएगा के विभिन्नताओं का, अलग पहचान का, सभी संस्कृतियों का सम्मान कैसे किया जाता है और इन सभी को एक राष्ट्र में एक साथ पिरोकर कैसे रखा जाता है। परेशानी यही है, कुछ दल (वामपंथी) या तो यूरोपियन अनुभव देखकर राष्ट्रवाद से डरे हुए हैं, और इसे हिंसक, नकारात्मक मानते हैं या कुछ दल (कांग्रेस) एक

समानांतर राष्ट्रवाद को खड़ा करने का प्रयास कर रहे हैं, ये दोनों ही गलत हैं, और ये दोनों ही भारतीय राष्ट्रवाद को नुकसान पहुँचा रहे हैं, आज के समय में भारत के असली राष्ट्रवाद को जनता तक पहुचाने की जरूरत है और सच्चे अर्थों में एक मजबूत राष्ट्र का निर्माण करेगा और राष्ट्रवाद की भावना का विकास कर पायेगा।

संदर्भ सूची

1. Anderson Benedict R. Imagined Communities: Reflections on the Origin and Spread of Nationalism (NewYork & London: Verso), 1991, 6-7.
2. Ibid.
3. Ibid.
4. Ibid.
5. Ibid.
6. Shareef, Shaik Mahammad Dr. "The Contribution of Journalism and Communication towards the attainment of Indian Independence – A Critical Review," International Journal of Media, Journalism and Mass Communications,2021:7(2):01-04. see also, "Role of Press in Independence," Accessed Via: http://niu.edu.in/sjmc/online-classes/Reference_Notes_Development_of_Media_Industry.pdf. Dated. 12/2/2021.
7. Chakrabarty, Manas, Ajoy Kr. Datta, Jaydip Roy. "Regionalism A Colonial Legacy of The British,"Indian Journal of Political Science,2009:70(3):693-704.
8. Nanda Subrat K. "Cultural Nationalism in a Multi-National Context: The Case of India,"Sociological Bulletin,2006:55(1):24-44.
9. see also, Athreya Aditi. "Cultural Nationalism in India," Antropology,2016:4(2). Accessed Via: https://www.longdom.org/open-access/cultural-nationalism-in-india-2332-0915-1000165.pdf. 12/2/2021.
10. "Indian nationalism and the British response, 1885–1920: Origins of the Nationalist Movement," Accesed Via:https://www.britannica.com/place/India/Indian-nationalism-and-the-British-response-1885-1920. Dated. 13/2/2021.
11. Tripathi Amales, Amitava Tripathi. Indian National Congress and the Struggle for Freedom, 2014, *1885-1947*. (Oxford Scholarship Online). (April). see also, Nationalist Movement in India," Accessed Via: https://ddceutkal.ac.in/Syllabus/MA_history/Paper_19.pdf. Dated. 15/2/2021.
12. Singh Amit. "Orientalism and India," *Researchgate.in.* (March) Accessed Via: https://www.researchgate.net/publication/323998082_Orientalism_and_India. Dated. 15/2/2021. see also, Tomizawa, Kana, "Sympathy and Prejudice: Late Eighteenth-century British "Orientalists" and their Ambiguous Attitudes towards India," Accessed Via: https://src-h.slav.hokudai.ac.jp/rp/publications/no13/13_4-2_Tomizawa.pdf. Dated. 15/2/2021. Hees, Peter (2003), "Shades of Orientalism: Paradoxes and Problems in Indian Historiography," History and Theory,2018:42(2):169-195.
13. Zastoupil Lynn. "J.S Mill and India," Victorian Studies,1988:32(1):31-54.
14. Pandey Anurag. "Rashtirya swayam sevak sangh: Popular myths and locked minds," International Journal of Humanities and Social Science Research,2021:7(5):19-25.